''भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में रामकाव्य का अध्ययन''

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा-846004

के

मानविकी संकाय के हिन्दी विषय

में

पीएच०डी० शोध हेतु प्रस्तुत

प्रस्तावित शोध-प्रबंध की रूपरेखा

2024

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 बिन्दु चौहान,
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
सी0एम0 कॉलेज
दरभंगा (बिहार)

शोध प्रज्ञा

कंचन कुमारी
पीएच0डी0
वर्ग क्रमांक : 14
पैट क्रमांक : E2209066
मो0नं0 : 9570226657

''भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में रामकाव्य का अध्ययन''

प्रस्तावना :

भारतीय ज्ञान की परम्परा हमारे देश की ऐसी समृद्ध परम्परा है जो सदियों से भारतीय जनमानस के चिंतन मनन, आचार व्यवहार, कर्मो में रची बसी है। भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ें वैदिक सभ्यता से पूर्व सिंधु घाटी सभ्यता तक जाती है। हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित की गई यह ज्ञान की परम्परा आज भी समाज और राष्ट्र के लिए उतना ही प्रासंगिक है जितना कि यूरोपीय लोगों के आगमन से पहले था। पद्म विभूषण डॉ० बी०बी० लाल का कथन है कि ''भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया में बहुत मजबूत अर्थ व्यवस्था थी। ब्रिटिश शासकों ने महसूस किया कि यदि देश में इस पारंपरिक शिक्षा पद्धति को जारी रखने की अनुमति दी जाती है तो उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए उन्होंने हमारी अपनी भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यवस्थित रूप से नष्ट करके यूरोपीय शिक्षा पद्धति को हम पर थोप दिया है।''

भारतीय ज्ञान परम्परा को जानने के लिए तीन मजबूत स्रोत है– शास्त्र ग्रंथ, पुरातत्त्व और लौकिक साहित्य। लेकिन इसके मूल स्रोत की बात करे तो वो वेद हैं। वेद का अर्थ ही होता है ज्ञान। यह ज्ञान जो ब्रह्माण्ड के सभी जिज्ञासाओं का उद्गम स्थल है। वेद को श्रुति भी कहा गया है जिसका अर्थ है सुना हुआ ज्ञान। इस ज्ञान का गुरू शिष्य परम्परा के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी विकास होता चला गया है और बाद में जाकर इसे लिपिबद्ध किया गया। साधारण रूप से श्रुति शब्द से वेद, ब्राह्मण और उपनिषद् का बोध होता है, स्मृति से वेदांग, इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र, नीति दर्शन के सभी ग्रंथ समझे जाते है।

- ❖ कल्प
- ❖ शिक्षा
- ❖ व्याकरण
- ❖ निरूक्त
- ❖ छंद
- ❖ ज्योतिष

भारतीय ज्ञान परम्परा के इतिहास में अगर हम झाँके तो हमें भारत को एक अलग नजरिये से देखने का दृष्टिकोण मिलता है जो इस वैश्वीकरण के युग में हर भारतीय को एक अलग पहचान देता है। आजकल भारत के बच्चे पढ़ाई करने विभिन्न देश जाते है परंतु प्राचीन समय में विभिन्न देशों के बच्चे पढ़ने के लिए भारत आते थे।

तक्षशिला को विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय माना जाता है। इस विश्वविद्यालय ने भारत को पाणिनी, जीवक (मगध राजवंश के राजवैद्य), चाणक्य जैसे रत्न दिए। नालंदा विश्वविद्यालय लगभग सात सौ वर्षों तक विश्व का सर्वोत्तम विश्वविद्यालय बना रहा। जिसमें प्रवेश हेतु कठोर परीक्षाएँ ली जाती थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यहाँ दस वर्ष तक पढ़ाई की थी। इसी तरह विक्रमशिला विश्वविद्यालय जहाँ आर्यभट्ट और अतीश दीपंकर जैसे विद्वान पढ़कर निकले। आक्रमणकारियों ने हमारे प्राचीन विश्वविद्यालयों को नष्ट जरूर किया लेकिन हमारी ज्ञान की परम्परा कभी न रूकने धारा को मिटा नहीं पाए। वेदों से लेकर जो परम्परा आगे बढ़ी वह श्रीमद्भगवदगीता, रामायण, महाभारत, रामचरितमानस आदि से होते हुए लोकजीवन में रची बसी है।

राम काव्य की परम्परा की व्यापकता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि भारत में बोली जाने वाली शायद ही कोई ऐसी भाषा हो जिसमें राम काव्य की श्रृंखला नहीं

मिलती हो। महर्षि वाल्मीकि के रामायण से पहले ही ऋग्वेद में राम का नाम आता है। रामचरित को जनप्रिय बनाने के लिए भक्तिकाल के सगुण भक्तिधारा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास ने सबसे अधिक योगदान दिया। तुलसी के रामचरितमानस के लिए वाल्मीकिकृत ''रामायण'' उपजीव्य ग्रन्थ है। भिन्न–भिन्न क्षेत्र में एक ही राम की भिन्न–भिन्न कथाएँ आज भी प्रचलित है। रामायण की कथा हमारे लोकसाहित्य का अहम हिस्सा है। गाँव–गाँव में राम के गीत आज भी गाए जाते है– जन्म हो, मुंडन हो, तीर्थयात्रा हो, विवाह हो या अन्य कोई शुभ अवसर हो। जैनों और बौद्धों की परम्परा में भी रामकथा का रूप भिन्न–भिन्न है। फादर कामिलबुल्के ने भी रामकाव्य पर व्यापक अनुसंधान किया है। प्रसिद्ध मानवशास्त्री श्यामाचरण दुबे ने भारत के विभिन्न जनपदों–जनजातियों तथा विदेशों में रहने वाले भारतवंशियों के बीच प्रचलित रामकथा के तीन हजार पाठों का उल्लेख किया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रामकथा की लोकस्वीकृति के संबंध में लिखा था कि ''रामायण का बीजभाव करूणा है।'' इस विषय में पंडित विद्‌यानिवास मिश्र का मत है कि– रामकथा का प्रसार भारत और एशिया के अन्य देशों में जिन कारणों से हुआ उनमें से प्रमुख है– रामचरित की उदात्त मानवीयता, जिसके अंतर्गत एक साथ कई बातें आती है– पिता की प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए कठिन वनवास का अंगीकार, एक पत्निव्रत, ऋषियों के प्रति आदर और श्रद्धा की भावना, उनकी रक्षा के लिए अपने बूते पर घोर संकल्प लेने की क्षमता, निषाद–कोल किरातों से घनी आत्मीयता, शरणागत के दया के स्थान पर मैत्री की भावना, वीरता के साथ–साथ अत्यधिक सौम्यता व निरभिमानता और कर्त्तव्य की कठोरता के साथ–साथ अद्‌भुत मृदुता।

प्राचीन काल से ही राम काव्य का वर्णन विभिन्न प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। जैसे– हरिवंश पुराण, नरसिंह पुराण, विष्णुपुराण, भागवत पुराण, महाभारत आदि ग्रंथों में। ऋषि वेदव्यास ने भगवत पुराण के नवम स्कंध में सूर्यवंशी राजाओं के वंश परंपरा का वर्णन तथा राम जन्म से लेकर वैकुण्ठ प्रयाण तक की कथा का संक्षिप्त वर्णन मिलता है।

शोध का विषय :

भारत की परंपरा मानव केंद्रित रही है। हमारा देश विश्व गुरू के रूप में विख्यात रहा है। आज हमारा देश लगातार उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है किन्तु प्रगति के इस दौड़ में मानवीयता पीछे छूटती जा रही है। हमारी आने वाली पीढ़ी अपने देश के मूल्य और संस्कृति से विमुख होती जा रही है।

प्रस्तावित शोध का विषय है ''भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में रामकाव्य का अध्ययन''। विषय से स्पष्ट है इस शोध में हमारी भारतीय ज्ञान की गौरवशाली परंपरा का अध्ययन किया जाएगा और रामकाव्य जो आदि कवि वाल्मीकि से लेकर वर्तमान परिदृश्य में क्यों प्रासंगिक है इसका अध्ययन किया जाएगा।

शोध का उद्देश्य :

1. हमारे भारत की ज्ञान परंपरा आज के संदर्भ में क्यों प्रासंगिक है इसका निर्धारण करना।
2. भारतीय ज्ञान परंपरा में रामकाव्य के योगदान का मूल्यांकन करना।
3. भारत के गौरवशाली परंपरा से समाज को अवगत करना तथा नई पीढ़ी तक पहुँचाना।
4. वैश्वीकरण के इस समाज में अपने गौरवशाली विरासत को अपनी जड़ों से जोड़ना।
5. रामकाव्य प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में क्यों प्रासंगिक है उसका निर्धारण करना।
6. लौकिक साहित्य, लोक गाथा, राम कथा की निर्बाध परंपरा का मूल्यांकन करना।

वर्तमान समय की समस्या एवं समाज में इसकी आवश्यकता :

किसी शोध की प्रासंगिकता वर्तमान में उसकी आवश्यकता को दर्शाती है कि आज के समय में उसकी जरूरत है या नहीं। यदि है तो प्रासंगिक है, नहीं है तो अप्रासंगिक। एक तरफ हमारा भारत प्रगति के मार्ग पर लगातार आगे बढ़ रहा है दूसरी तरफ हम अपनी जड़ों से अपने मूल्य एवं संस्कृति से कटते जा रहे है विमुख होते जा रहे हैं। ऐसे में हमारा प्रमुख कर्त्तव्य है कि अपने प्राचीन इतिहास अपने अनमोल खजाने को नए संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास करे ताकि हमारा समाज वैश्वीकरण के युग में अपनी क्षमता को पहचान सकें।

शोध–प्रविधि :

प्रस्तावित शोध भारतीय ज्ञान परंपरा और रामकाव्य एक प्रकार का ऐतिहासिक शोध है। इसलिए इसमें क्षेत्र भ्रमण पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, तुलनात्मक पद्धति विश्लेणात्मक पद्धति, विवरणात्मक तथा व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। जरूरत पड़ने पर जनकपुर और मिथिला तथा अयोध्या क्षेत्र भ्रमण कर साक्षात्कार पद्धति भी अपनाया जाएगा।

अध्ययन का महत्व :

कोई भी व्यक्ति समाज से अलग नहीं होता। हर एक समाज अपने अतीत अपनी संस्कृति के नींव पर खड़ा होता है। समाज में रहने वाले हर एक व्यक्ति का कर्त्तव्य होता है कि वो अपने समाज के रीति–रिवाज, आचार–व्यवहार और संस्कार का पालन करें। अतः प्रस्तावित शोध में ऐसे कारणों पर ध्यान दिया गय है जो हमारे समाज को उनकी जड़ों से जोड़ने का काम करे।

वर्तमान ज्ञान में योगदान –

''भारतीय ज्ञान परंपरा और रामकाव्य'' शोध कार्य के माध्यम से वर्तमान के जटिल समस्याओं को पहचानकर कारणों के प्रति सजग होकर विचार कर सकेंगे तथा नई प्रेरणा

और ऊर्जा के साथ में हम इन समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने तथा समाज के लिए कुछ करने की सामर्थ्य पैदा कर सकेंगे।

भविष्य में कार्य होने की संभावना – रामकाव्य पर कई शोध हो चुके हैं और हो रहे है। नई शिक्षा नीति–2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा पर विशेष बल दिया गया है। प्रस्तावित शोध भारतीय ज्ञान परंपरा और रामकाव्य एक ऐतिहासिक शोध होगा जिससे भविष्य में इस पर कार्य होने की अनेक राहें खुल जाएँगी।

समस्याओं से जुड़े प्रश्नों पर साहित्य हमेशा आवाज उठाता आया है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ी वर्तमान समस्याओं पर भविष्य में कार्य होने की अपने संभावनाएँ है।

पूर्व में किये गये शोध :

रामकाव्य पर पूर्व में कई शोध हो चुके हैं, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण शोध निम्नलिखित हैं–

1. रामकथा– फादर कामिल–बुल्के, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
2. रामभक्ति परंपरा का विकास – कृष्ण मुरारी सिंह, बिहार विश्वविद्यालय।
3. वाल्मीकि रामायण का समालोचनात्य अध्ययन – अमृत लाल, पूर्वांचल विश्वविद्यालय।
4. वाल्मीकि रामायण एवं रामचरित मानस का तुलनात्मक अध्ययन – मंजू त्रिपाठी, गोरखपुर विश्वविद्यालय।

रामकाव्य पर पूर्व में किए गए शोधों में भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़कर कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। अतः प्रस्तावित शोध अपने आप में अनूठा साबित होगा। इससे साहित्य जगत में नए अध्याय जुड़ेंगे।

अध्ययन की रूपरेखा :

प्रस्तावना/भूमिका :

1. भारतीय ज्ञान परंपरा : परिभाषा एवं इतिहास

   (क) परिभाषा एवं प्रारंभिक स्रोत

   (ख) वैदिक एवं लौकिक संस्कृत

   (ग) गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं प्राचीन विश्वविद्यालय

   (घ) लौकिक साहित्य एवं संस्कृति

   (ड.) वर्तमान भारत : भारतीय ज्ञान की परंपरा

2. भारतीय ज्ञान परंपरा : अध्ययन

   (क) वेद

   (ख) वेदांग

   (ग) दर्शन

   (घ) महाकाव्य

   (ड.) विपुल लोक साहित्य एवं मौखिक परंपरा

3. रामकाव्य की अवधारणा एवं विपुल इतिहास

   (क) वैदिक और लौकिक संस्कृत में रामकाव्य

   (ख) बौद्ध और जैन रामकाव्य

   (ग) आधुनिक भारतीय भाषाओं में रामकाव्य

   (घ) भारतेत्तर साहित्य और रामकाव्य

   (ड.) लौकिक साहित्य में रामकाव्य

4. भारतीय ज्ञान परंपरा और रामकाव्य का अन्तर्संबंध

(क) वाल्मीकिकृत रामायण

(ख) तुलसीदास कृत रामचरितमानस

(ग) मैथिली रामायण

(घ) नेपाली रामायण

(ङ.) लोक संस्कृति में राम

5. भारतीय ज्ञान परंपरा में रामकाव्य का अध्ययन

(क) रामचरित की उत्पत्ति और विकास

(ख) राम का चरित्र और महाकाव्य

(ग) लोक परंपरा में राम और सीता

(घ) राम के चरित्र की प्रासंगिकता आज के संदभ में

(ङ.) भारतीय ज्ञान की परंपरा में रामकाव्य और हमारा वर्तमान भारत

उपसंहार

संदर्भ और सहायक ग्रन्थ सूची

आधार ग्रंथ–सूची :

1. वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. रामचरित मानस, गीताप्रेस, गोरखपुर
3. रामाज्ञा प्रश्न, गीताप्रेस, गोरखपुर
4. बरवै रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर
5. रामलला नहछू, गीताप्रेस, गोरखपुर
6. वैराग्य संदीपनी, गीताप्रेस, गोरखपुर
7. जानकी मंगल, गीताप्रेस, गोरखपुर
8. पार्वती मंगल, गीताप्रेस, गोरखपुर
9. गीतावली, गीताप्रेस, गोरखपुर
10. दोहावली, गीताप्रेस, गोरखपुर
11. कवितावली, गीताप्रेस, गोरखपुर
12. श्रीकृष्ण गीतावली, गीताप्रेस, गोरखपुर
13. विनय पत्रिका, गीताप्रेस, गोरखपुर
14. रामचन्द्रिका, प्रकाशन रामनारायण लाल बेनलीमाधव, कटरा, इलाहाबाद
15. साकेत, लोकभारती प्रकाशन, 2012
16. राम की शक्तिपूजा
17. संशय की एक रात
18. अपने–अपने राम, वाणी प्रकाशन, 2014
19. अभ्युदय, डायमण्ड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2014
20. रामगाथा
21. मैं राम बोल रहा हूँ, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2010

सहायक ग्रंथ–सूची :

1. अमरनाथ (डॉ०) हिन्दी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012
2. अग्रवाल, विजय, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, प्रकाशन सूचना और प्रसारण मंत्रालयत्र, नई दिल्ली, संस्करण 1994
3. आगर, (श्रीमति) हरिणीरानी (डॉ०) बीसवीं सदी का राम साहित्य, समता प्रकाशन कानपुर देहात, संस्करण प्रथम 2014
4. कटारिया, निरंजन जे० (डॉ०), मध्यकालीन हिन्दी गुजराती रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन, साधना प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2012
5. कुमार संजीव, तीन सौ रामायने एवं अन्य निबन्ध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2013
6. कुमार आनन्द (रूपान्तरकार) वाल्मीकि रामायण, राजपाल, प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2011
7. गुप्त, माताप्रसाद (डॉ०) तुलसीदास (एक समालोचनात्मक अध्ययन), हिन्दी परिषद्, प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2002
8. तिवारी, अजय (डॉ०), तुलसीदास एक पुनर्मूल्यांकन, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), संस्करण द्वितीय 2011
9. तिवारी, रामजी, गोस्वामी तुलसीदास, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, संस्करण 1998 (2015)
10. तिवारी, डॉ० रामचन्द्र, मध्ययुगीन काव्य साधना, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, फैजाबाद
11. तिवारी, नित्यानंद, आधुनिक साहित्य और इतिहासबोध, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009

12. तिवारी, शिव स्वरूप (डॉ०), कवितावली, भाष्य आशीश प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2013
13. त्रिपाठी, डॉ० सत्यनारायण केशव, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1917
14. त्रिपाठी विश्वनाथ, लोकवादी तुलसी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण पाँचवाँ, 2016
15. त्रिवेदी, रामेश चन्द्र, मानस एक दृष्टि अनेक, आशीष प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–2011
16. त्रिपाठी, राममूर्ति, तुलसी, लोक भारती, प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2013
17. दास, तुलसी गोस्वामी, गीतावली, गीताप्रेस प्रकाशन, गोरखपुर संस्करण, 2070 (अड़तीसवाँ)
18. दास, गोस्वामी तुलसी, विनय पत्रिका, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण संवत् 2070 (बहत्तरहवाँ)
19. दास, गोस्वामी तुलसी : पार्वती मंगल, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण सं० 2070
20. दास, गोस्वामी, तुलसी : पार्वती मंगल, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण सं० 2063
21. दास, गोस्वामी तुलसी, (सं० योगेन्द्र प्रताप सिंह) कवितावली, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2006
22. दास, गोस्वामी तुलसी (टीकाकार– हनुमान प्रसाद पोद्दार) श्रीरामचरित मानस, गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण सं० 2074
23. दास, गोस्वामी तुलसी, वैराग्य संदीपनी, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण सं० 2062
24. दास, गोस्वामी तुलसी, बरवै रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण सं० 2062
25. दीन, जयराम दास, मानस शंका, समाधान, गीताप्रेस प्रकाशन, गोरखपुर, संस्करण 2070 (छिहत्तरवां पुनमुर्दण)

26. दोषी, एस०एल०, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव समाज शास्त्रीय सिद्धांत, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, संस्करण 2016

27. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1990

28. नवल, नंदकिशोर, तुलसीदास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2013

29. परमहंस स्वामी अडगडानन्द जी, आश्रम ट्रस्ट न्यू अपोलो स्टेट, गाला नं० 5, मोगा लेन (रेलवे सब वे के पास) अंधेरी पूर्व मुंबई, जुलाई 2018

30. परमहंस जी श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज, जीवानदर्श एवं जीवानुभूति

31. प्रसाद, दिनेश्वर, फादर सामिल बुल्के, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, संस्करण 2002 (पुनमुर्द्रण 2014)

32. पाण्डेय, रामलखन (डॉ०), तुलसीदासोत्तर हिन्दी राम–साहित्य, विभा प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2003

33. बुल्के, कामिल, रामकथा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1999

34. भट्‌ट, नानाभाई, रामायण के पात्र, संस्था साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, संस्करण 2016

35. मदान, इन्द्रनाथ, आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2000

36. महाराज श्री स्वामी करपात्री जी, मार्क्सवादी और रामराज्य, गीताप्रेस, प्रकाशक, गोरखपुर, संस्करण 2070 (आठवाँ)

37. महेश्वरी, प्रेमचन्द्र, हिन्दी रामकाव्य का स्वरूप और विकास (बदलते युग के परिप्रेक्ष्य में), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1998

38. मिश्र, डॉ० कैलाशनाथ, मानस वृतकोश, प्रकाशक चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण प्रथम 2005

39. मिश्र, विद्यानिवास, इतिहास, परम्परा और आधुनिकता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्लीइ, संस्करण प्रथम 2015

40. मिश्र, भगवती शरण (डॉ०) मैं राम बोल रहा हूँ, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण 2010

41. मेहरोत्रा, श्रीाम, राम उत्कर्ष का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2016

42. मेहता, सूरजमल, वाल्मीकि कृत राम–कथा, सस्ता साहित्य मण्डल, प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2011

43. राय, डॉ० रामदरश, आधुनिक हिन्दी कविता में पौराणिक सन्दर्भो की पुनर्रचना, नयन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001

44. राम, कुबेरनाथ, रामायण, महातीर्थ, भारत ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2011

45. राय, श्याम शंकर (डॉ०) मैथिली शरण गुप्त के रामकाव्य, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण 2013

46. राव, पाण्डुरंग (डॉ०) रामायण के महिला पात्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2013

47. राघव, रांगेय, तुलसीदास का कथा, शिल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण प्रथम 2015

48. वी०जी० मधुरिमा, राम चरित मानस भारतीय संस्कृति, जवाहर पुस्तकालय प्रकाशन, मथुरा, संस्करण 2013

49. सिंह, उदयभानु, तुलसी काव्य, श्रीमान राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, दूसरी आवृत्ति, 2011
50. सिंह, गीता (डॉ०), श्रीरामचरित मानस और रामचन्द्रिका, शिल्प विधान का तुलनात्मक अध्ययन, अमन प्रकाशन, संस्करण 2011
51. The collected Essays of AK Ramanujan, Oxford University Press, 1999
52. Three Hundred Ramayanas : Five Examples and Three Thoughts on Translation – A.K. Ramanujan
53. MYTH AND REALITY, D. D. Kosambi, Popular Prakashan, Bombay-1962
54. What is History, E.H. Karr, Penguin Books Ltd, Second Edition, 1987
55. संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, उदयाचल, संस्करण 1962
56. A History of Indian Literature, Moriz Winternitz, Vol. 1, Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, Delhi, Edition 1996
57. Sanskrit Studies, Vol. 1., (ed.) Journal of the Centre of Sanskrit Studies, JNU, DK Print World
58. मेहो जी कृत रामायण – डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
59. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य, प्रो० पूरनचन्द्र टण्डन, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
60. https://bit.ly.3kitjRd
61. www.sahityashilpi.com/2008/09/blogspo3518htm
62. https://hi.wikipedia.org/wiki

63. Gadyakosh.org/gk

64. https://panchjanya.com/2022/09/26/251775/opinion/ram-anant-ram-katha-ananta/

कोश ग्रन्थ–सूची :

1. राम साहित्य कोश, राजकमल प्रकाशन

2. मानस वृत्त कोश, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर

3. हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी

पत्र–पत्रिकाएँ :

1. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग–9, अंक–4, 1923

2. कल्याण, गीताप्रेस, गोरखपुर

3. आजकल, नई दिल्ली

4. आलोचना, नई दिल्ली

5. पतहर

6. दस्तावेज, गोरखपुर